

मूंग के रोगों का निवारण

पिंकी शर्मा, बृजेश और **सुशीला यादव**

"मूंगबीन (विग्ना रेडियाटा) भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख दलहनी फसलों में से एक है। इसकी खेती मुख्यत खरीफ और ग्रीष्म में तथा कुछ क्षेत्रों में वसंत ऋतु में भी की जाती है। इसकी कम अवधि में पकने वाली किस्में फसल प्रणाली में आसानी से सम्मिलित की जा सकती हैं। मूंग के दानों में उच्च गुणवत्ता का प्रोटीन पाया जाता है तथा इसका उपयोग दाल, अंकुरित दाने और विभिन्न खाद्य उत्पादों के रूप में किया जाता है।"

मूंग की खेती में उत्पादकता बढ़ाने की पर्याप्त संभावनाएं हैं, लेकिन रोगों का प्रकोप इस लक्ष्य में प्रमुख बाधा है। रोगों के कारण पत्तियों का हरित क्षेत्र कम हो जाता है, पौधों की वृद्धि रुकती है, फूल एवं फलियों का विकास प्रभावित होता है तथा दानों की संख्या और भार में कमी आती है। कुछ रोग सीधे पौधे की जड़ों एवं तनों को प्रभावित करके पौधे को मुरझाने या सूखने की स्थिति तक पहुंचा देते हैं। मूंग में विषाणुजनित, कवकजनित तथा जीवाणुजनित रोग पाए जाते हैं। इस प्रकार मूंग की सफल एवं लाभकारी खेती के लिए रोगों की समय पर पहचान तथा समेकित रोग प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है।

पौध व्याधि विभाग, राजस्थान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, उदयपुर (राजस्थान)

प्रमुख रोग

सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग

रोगकारक: *सर्कोस्पोरा कैनेसेन्स*



पत्ती धब्बा रोग का प्रकोप

प्रमुख लक्षण

इस रोग में सबसे पहले पत्तियों पर छोटे, गोल से अनियमित भूरे या लाल-भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। रोग बढ़ने पर धब्बों का आकार बढ़ जाता है और अनेक धब्बे आपस में मिल जाते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियां समय से पहले झड़ जाती हैं। पत्तियों के अधिक प्रभावित होने से पौधे की प्रकाश संश्लेषण क्षमता कम होती है और फलियों तथा दानों का विकास प्रभावित होता है।

रोग वृद्धि की अनुकूल परिस्थितियां

अधिक आर्द्रता, लगातार वर्षा तथा पत्तियों पर लंबे समय तक नमी रहने की स्थिति में पत्ती धब्बा रोग तेजी से बढ़ जाता है।

प्रबंधन

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीजों का प्रयोग करना।
- फसल अवशेषों को खेत में न छोड़ना।
- उचित फसलचक्र अपनाना।
- खेत में पर्याप्त वायु संचार।
- अत्यधिक घनी बुआई न करना।
- आईपीएम 512-1 (सूर्या), आईपीएम 312-20 (वसुधा), आईपीएम 409-4 (हीरा) एवं आईपीएम 205-7 (विराट) जैसी रोगरोधी किस्मों का चयन करना।
- रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी./0.025 प्रतिशत अथवा थायोफेनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू.पी./0.05 प्रतिशत का एक से दो पर्णीय छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

एन्थ्रेक्नोज

रोगकारक: *कोलेटोट्राइकम लिंडेमुथियानम*

प्रमुख लक्षण

इस रोग में पत्तियों, तनों तथा फलियों पर भूरे-काले रंग के धब्बे या घाव बन जाते हैं। तने पर बने घाव लंबे तथा धंसे हुए हो सकते हैं। फलियों पर गहरे रंग के धंसे हुए घाव दिखाई देते हैं। गंभीर संक्रमण की स्थिति में फलियों तथा बीजों की गुणवत्ता भी प्रभावित हो होती है।

प्रबंधन

- रोगमुक्त एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करना।
- बुआई से पूर्व बीजों को कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी./2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज



एन्थ्रेक्नोज रोग का संक्रमण

की दर से उपचारित करें, जिससे एन्थ्रेक्नोज सहित बीज एवं प्रारंभिक अवस्था में होने वाले फफूंदजनित रोगों से सुरक्षा मिल सके।

- रोग की प्रारंभिक अवस्था में प्रोपिकोनाजोल अथवा कार्बेण्डाजिम/0.1 प्रतिशत (1 मि.ली./ग्राम प्रति लीटर पानी) का पर्णीय छिड़काव तथा आवश्यकतानुसार दूसरा छिड़काव करना।
- संक्रमित पौधों एवं फसल अवशेषों को खेत से हटाना।
- उचित फसलचक्र अपनाएं।

अत्यधिक नमी से बचाव।

वेब झुलसा

रोगकारक: *राइजोक्टोनिया सोलानी*

प्रमुख लक्षण

इस रोग में पत्तियों पर छोटे, अनियमित भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। अनुकूल परिस्थिति होने पर ये धब्बे तेजी से बढ़ते हैं और आपस में मिल जाते हैं। गंभीर अवस्था में पत्तियों का बड़ा भाग झुलसा हुआ दिखाई देता है।

अनुकूल परिस्थितियां

अधिक आर्द्रता, लगातार वर्षा, अधिक घनी फसल तथा खेत में लंबे समय तक नमी रहने से रोग बढ़ जाता है।

प्रबंधन

- स्वस्थ बीज का उपयोग करना।
- उचित पौध दूरी रखना।
- खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करना।
- अनावश्यक अधिक सिंचाई न करना।



वेब झुलसा रोग का प्रभाव

चूर्णिल आसिता

रोगकारक: *एरिसिफे पॉलीगोनी*

प्रमुख लक्षण

रोग की शुरुआत पत्तियों पर छोटे सफेद चूर्ण जैसे धब्बों से होती है। धीरे-धीरे सफेद कवकीय वृद्धि पत्तियों के बड़े क्षेत्र में फैल जाती है। गंभीर अवस्था में पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और समय से पहले सूख जाती हैं।



प्रबंधन

- चूर्णिल आसिता रोग के प्रबंधन के लिए रोगरोधी किस्मों का उपयोग करना, जैसे बीपीएमआर-1, बीपीएमआर-115, टीएआरएम-18, टीएआरएम-1, टीएम-96-2, बीपीएमआर-145, वैभव एवं एलजीजी-460।
- अत्यधिक घनी फसल से बचना।
- खेत में उचित वायु संचार बनाए रखना।
- संतुलित पोषक तत्व प्रदान करना।
- रोग की प्रारंभिक अवस्था में प्रोपिकोनाजोल 25 ई.सी./0.1 प्रतिशत (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) अथवा कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी./0.1 प्रतिशत (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) का पर्णीय छिड़काव करना।
- सल्फर-आधारित फफूंदनाशी, जैसे वेटेबल सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यू.पी./2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव करना।

- संक्रमित फसल अवशेषों को नष्ट करना।
- फसलचक्र अपनाएं।
- मूंगबीन में वेब ब्लाइट के प्रबंधन के लिए आईपीयू 10-26, आईपीयू 13-1, आईपीयू 19-10 (नर्मदा), आईपीयू 17-2 (दृष्टि) तथा आईपीयू 13-6 (ताप्ती) जैसी वेब ब्लाइट प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करना।
- बुआई से पूर्व बीजों को कार्बेण्डाजिम से बीज उपचार/2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज करें तथा रोग की प्रारंभिक अवस्था में प्रोपिकोनाजोल+कार्बेण्डाजिम/0.1 प्रतिशत के दो पर्णीय छिड़काव करना।

मैक्रोफोमिना झुलसा/चारकोल गलन

रोगकारक: *मैक्रोफोमिना फेजियोलिना*

प्रमुख लक्षण

इस रोग में रोगग्रस्त पौधे धीरे-धीरे मुरझाने लगते हैं। जड़ तथा तने के निचले भाग में संक्रमण होने से पौधे की जल एवं



मैक्रोफोमिना झुलसा रोग से ग्रसित पत्तियां

पोषक तत्व ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। गंभीर संक्रमण में पूरा पौधा सूख जाता है।

अनुकूल परिस्थितियां

गर्म एवं शुष्क परिस्थितियां इस रोग की वृद्धि में सहायक होती है।

प्रबंधन

- स्वस्थ बीजों का उपयोग करना।
- संक्रमित पौधों एवं फसल अवशेषों को खेत में न रहने देना।
- आवश्यकतानुसार रोग के प्रबंधन के लिए कार्बेण्डाजिम/2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज से बीज उपचार करना तथा प्रोपिकोनाजोल+कार्बेण्डाजिम/0.1 प्रतिशत के दो पर्णीय छिड़काव करें।
- रोग के प्रबंधन के लिए ट्राइकोडर्मा आधारित जैव-नियंत्रण, उचित फसलचक्र तथा फसल में नमी तनाव से बचाव जैसे एकीकृत उपाय अपनाना।

जड़ गलन

रोगकारक: *राइजोक्टोनिया सोलानी*

प्रमुख लक्षण

इस रोग में प्रारंभ में जड़ों एवं तने के भूमिगत भाग पर भूरे से गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। जड़ें धीरे-धीरे गलने लगती हैं तथा उनकी सामान्य संरचना नष्ट हो जाती है। संक्रमित पौधों में पत्तियां पीली पड़कर मुरझाने लगती हैं। संक्रमण अधिक होने पर पौधों की वृद्धि रुक जाती है और पौधे सूख जाते हैं।



जड़ गलन रोग का प्रभाव

अनुकूल परिस्थितियां

अधिक नमी में रोग बढ़ जाता है।

प्रबंधन

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करना।
- रोगग्रस्त खेत में लगातार मूंगबीन की खेती न करके उचित फसलचक्र अपनाना।
- खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था रखना और पानी का जमाव न होने देना।
- संक्रमित पौधों एवं फसल अवशेषों को खेत से निकालकर नष्ट करें।
- ट्राइकोडर्मा आधारित जैव नियंत्रण एजेंटों का प्रयोग एकीकृत रोग प्रबंधन में किया जा सकता है।

उकठा रोग

रोगकारक: *फ्यूजेरियम* प्रजातियां

प्रमुख लक्षण

इस रोग में प्रारंभिक अवस्था में पौधों

पीला मोजैक रोग

रोगकारक: मूंगबीन में इस रोग का कारक येलो मोजैक विषाणु है।

रोगवाहक: सफेद मक्खी।

प्रमुख लक्षण : रोग के प्रारंभिक लक्षण युवा पत्तियों पर छोटे-छोटे पीले धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे ये धब्बे बढ़ते हैं और पत्ती पर पीले तथा हरे क्षेत्रों का विशिष्ट मोजैक बन जाता है। रोग की तीव्रता बढ़ने पर पत्तियां अधिक पीली दिखाई देने लगती हैं तथा पौधों की वृद्धि प्रभावित होती है। गंभीर संक्रमण की स्थिति में फूलों एवं फलियों का विकास कम हो जाता है। फलियां छोटी रह सकती हैं तथा दानों की संख्या एवं आकार में कमी आ सकती है। प्रारंभिक अवस्था में संक्रमण होने पर उपज पर अधिक प्रभाव पड़ता है।



रोग का प्रसार: पीला मोजैक रोग मुख्यत: सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। संक्रमित पौधे तथा कुछ वैकल्पिक पोषक पौधे रोग के स्रोत के रूप में कार्य कर सकते हैं।

प्रबंधन

- रोग के प्रबंधन हेतु पीडीएम-11, पीडीएम-139 (सम्राट), आईपीएम 99-125 (मेहा) एवं पंत मूंग-4 जैसी रोगरोधी किस्मों का चयन एवं उपयोग करना।
- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करना।
- खेत में रोगग्रस्त पौधों की नियमित निगरानी करना।
- प्रारंभिक अवस्था में संक्रमित पौधों को उखाड़कर खेत से बाहर करना।
- खेत तथा आसपास के खरपतवारों को नियंत्रित रखना।
- सफेद मक्खी की संख्या को नियंत्रित रखना।
- समय पर बुआई और क्षेत्र के लिए अनुशंसित बुआई समय का पालन करना।



उकठा रोग का प्रभाव

की निचली पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं और बाद में पत्तियां मुरझाने लगती हैं और पूरा पौधा धीरे-धीरे उठने लगता है। जड़ों तथा तने के संवहनी ऊतकों में भूरापन दिखाई देता है। संक्रमित पौधों की वृद्धि रुक जाती है और गंभीर संक्रमण में पौधे सूख जाते हैं। खेत में रोगग्रस्त पौधे सामान्य पौधों के बीच अलग-अलग या छोटे समूहों में दिखाई देने लगते हैं।

प्रबंधन

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करना।
- उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बुआई से पूर्व ट्राइकोडर्मा आधारित जैव-फफूंदनाशी/10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज से बीजोपचार करना।
- खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था रखना।
- लगातार एक ही दलहनी फसल लेने से बचना तथा फसलचक्र अपनाना।
- संक्रमित पौधों एवं फसल अवशेषों को खेत से हटाना

पत्ती सिकुड़न रोग

रोगकारक: विषाणु

प्रमुख लक्षण

रोगग्रस्त पौधों की नई पत्तियां सिकुड़ी हुई, झुर्रीदार एवं विकृत दिखाई देती हैं। पत्तियों का सामान्य फैलाव प्रभावित होता है। गंभीर अवस्था में पौधों की वृद्धि, फूल तथा फलियों का विकास प्रभावित हो सकता है।

प्रबंधन

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करना।
- रोगग्रस्त पौधों को प्रारंभिक अवस्था में ही उखाड़कर नष्ट करना।



पत्ती सिकुड़न रोग का प्रकोप

- खेत एवं आसपास के खरपतवारों को नियंत्रित करना।
- रोग फैलाने वाले कीटों का समेकित नियंत्रण करना।
- रोगरोधी किस्मों को प्राथमिकता देना। उदाहरण के लिए आईपीएम 02-14 को पत्ती सिकुड़न रोग से प्रतिरोधी पाया गया है।

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका
'खेती' दिसम्बर, 2026 अंक के प्रमुख आकर्षण

- कार्बन खेती से जलवायु अनुकूल कृषि
- मत्स्य पालन हेतु तालाब की मृदा एवं जल गुणवत्ता प्रबंधन
- अमरूद-मूंग आधारित कृषि-उद्यानिकी अपनाएं
- देसी मांगुर प्रजनन एवं पालन
- बंधाई तकनीक से गन्ना गिरने की समस्या का समाधान
- रामतिल की खेती
- सुनियोजित कृषि में सेंसरों के अनुप्रयोग
- संरक्षित कृषि से ढलान वाली भूमि की बढ़ाएं उत्पादकता
- पटसन बीज उत्पादन की विधि
- मखाना उत्पादन से बढ़ती संभावनाएं

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in